'समण संस्कृति' का विमोचन हुआ

जैन विद्या का प्रसार करना हो संकाय का मुज़्य लक्ष्य : आचार्य महाश्रमण

सरदारशहर 9 नवज़्बर, 2010

जैन विश्व भारती के शिक्षा विभाग समण संस्कृति संकाय के 33 वर्षों का इतिहास अपने में समाहित करने वाली स्मारिका 'समण संस्कृति' का विमोचन मंगलवार को प्रात: तेरापंथ भवन में आयोजित प्रवचन कार्यक्रम में आचार्य महाश्रमण ने किया। जैन विश्व भारती एवं संकाय के कार्यकर्त्ताओं द्वारा समर्पित 'समण संस्कृति' का विमोचन करते हुए आचार्य महाश्रमण ने कहा कि भारतीय विद्याओं में जैन विद्या महत्वपूर्ण विद्या है। जैन विश्व भारती जैन विद्या एवं प्राच्य विद्या पर कार्य करने के लिए मुज़्य रूप से स्थापित हुई है। समण संस्कृति संकाय का मुज़्य लक्ष्य जैन विद्या का प्रसार करना होना चाहिए। उन्होंने कहा कि संकाय जैन विद्या परीक्षाओं के द्वारा बहुत अच्छा कार्य कर रहा है। स्मारिका का प्रकाशन हुआ है। इसमें इतिहास को समेटा गया है। जब संस्था का इतिहास सुरक्षित होता है, तभी भावी पीढी उनको जान सकती है। आचार्य महाश्रमण ने स्मारिका प्रकाशन एवं संकाय की गतिविधियों में समय और श्रम नियोजि करने वालों की सरहाना करते हुए कहा कि जैन विद्या के विकास हेतु सेवा देना बहुत विशिष्ट सेवा है, मननीय कार्य है।

उन्होंने मुज़्बई, सूरत, अहमदाबाद आदि क्षेत्रों में संघ के रूप में पहुंचे लोगों एवं सभा संस्थाओं के कार्यकर्त्ताओं को जैन विद्या का अध्ययन करने की प्रेरणा देते हुए कहा कि तेरापंथ से जुड़ी हुई प्रत्येक संस्था में अणुव्रत का प्रभाव होना चाहिए। जैन विद्या परीक्षाओं में बैठने वाले विद्यार्थी भी इस ओर ध्यान दें। वे इन परीक्षाओं नकल आदि अनेक कार्यों से नज़्बर ज्यादा लाने का प्रयास न करें। प्रामाणिकता के साथ परीक्षाएं होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि जैन विद्या का सार है उपशम की साधना। जो उपशम की साधना करता है, लाभ अलाभ में सम रहता हे, साधना ही जिसका धन है वह संत होता है।

इससे पूर्व जैन विश्व भारती के उपमंत्री अरविन्द गोठी, समण संस्कृति संकाय के निदेशक जिनेन्द्र कोठारी, विभागाधिपति रतनलाल चौपड़ा, स्मारिका प्रकाशन सहयोगी मालचन्द बेगानी, स्मारिका संपादक राजेश सुराणा ने संकाय के पीछले 33 वर्षों से प्रभारी मुनि सुमेरमल 'सुदर्शन' एवं मुनि जयंतकुमार से मिले मार्गदर्शन के लिए आभार जताया। मुनि जयंत कुमार ने 'तेरा तुझको समर्पित' की तर्ज पर स्मारिक प्रकाशन तक की सफल यात्रा के पीछे पूज्यवरों के आशीर्वाद को बताया। कार्यक्रम का मंगलाचरण प्रिति कुण्डलिया एवं रजनी दुगड़ ने किया। संचालन मुनि मोहजीतकुमार ने किया। समारोह की सज़्पन्नता से पूर्व नन्हा बालक कीर्ति मेड़तवाल, मरुधर मित्र परिषद के अध्यक्ष हुलास चौरड़िया, अहमदाबाद ज्ञानशाला के बच्चों एं रवि मालू आदि ने अपने भावों की अभिव्यक्ति गीत एवं वक्तवयों के द्वारा दी। चातुर्मास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष सुमतिचन्द गोठी ने मरुधर मित्र परिषद के अध्यक्ष हुलास चौरड़िया, कुलदीप बैद का मोमेंटो द्वारा सज़्मान किया।

खूब जमा कवि सज़्मेलन

भारत में अब मत आना रे, प्यारे कृष्ण कन्हैया. . .

सरदारशहर 9 नवज़्बर, 2010

आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में आयोजित कवि सज़्मेलन देर रात तक खूब जमा। तेरापंथ भवन में तेरापंथ युवक परिषद द्वारा आयोजित एवं मूलचन्द विकास कुमार मालू द्वारा प्रायोजित इस कवि सज़्मेलन में देश के जाने-माने हास्य कवि सुरेन्द्र शर्मा, वीर रस के कवि हरिओम पंवार, सुनील जोशी, राजेश चेतन ने एक से बढ़कर एक कविता पाठ कर श्रोता को लोट-पोट किया। 'भातर में अब मत आना रे प्यारे कृष्ण कन्हैया' गीत के द्वारा जहां सुनील जोशी ने वर्तमान व्यवस्था पर एवं रहन-सहन पर करारा व्यंग कसा तो वहीं हरिओम पंवार ने कारगिल शहीदों एवं भारत का संविधान बोलता हूं, कविताओं को प्रस्तुत कर श्रोताओं को ओम अर्हम् की हर्ष ध्वनि करने के लिए मजबूर कर दिया। सुरेन्द्र शर्मा ने हंसी की फूलझड़ियों से खूब हंसाया तो 'वहीं मां-बाप मेरे साथ रहते हैं' कविता के द्वारा युवा पीढ़ी को माता-पिता की सेवा करने की सीख भी दी। मुनि मोहजीतकुमार, मुनि कुमार श्रमण, मुनि जयकुमार ने भी व्यंग और मार्मिक कविताओं की प्रस्तुति दी। राजेश चेतन ने अमेरिका में बढ़ते भारतीयों के प्रभाव को परिलक्षित कर कविता पाठ किया। तेरापंथ युवक परिषद के संरक्षक श्रीचन्द नौलखा, राजकुमार बरड़िया, दिलीपकुमार दुगड़ अध्यक्ष गौतम बाफना, मंत्री कमलेश आंचलिया ने कवियों का साहित्य के द्वारा सज़्मान किया। कवि सज़्मेलन के संयोजक दीपक पींचा ने आभार ज्ञापित किया। संचालन कवि राजेश चेतन ने किया।